सम्पादकीय

एक लम्बे समय के बाद अब स्कूल खुलने लगे हैं और बच्चे स्कूल जाने लगे हैं। स्कूल का नियमित संचालन ज़रूरी है लेकिन साथ ही यह भी ज़रूरी है कि इस दौर में आवश्यक सभी सावधानियों को ध्यान में रखते हुए स्कूल व कक्षाओं को संचालित किया जाए। बच्चों से भी इन ज़रूरी सावधानियों के बारे में बात की जाए।

स्कूल बच्चों के लिए कितने महत्त्वपूर्ण हैं यह पिछले वर्षों के अनुभवों ने काफ़ी अच्छे-से जतला दिया है। न केवल बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास के लिए, बल्कि उनके सीखने-सिखाने के लिए भी स्कूल व कक्षा प्रक्रियाएँ महत्त्वपूर्ण हैं। इतने लम्बे समय तक स्कूल और कक्षा प्रक्रियाओं से दूर रहने के बाद अब बच्चे स्कूल लौटे तो हैं लेकिन बहुत कुछ भूलकर। इस सन्दर्भ में किए गए अध्ययन भी यही दर्शाते हैं। इसलिए स्कूलों के खुलने के साथ-साथ इसपर विचार ज़रूरी है कि उनके साथ सीखने-सिखाने की शुरुआत कैसे हो? ख़ासकर उन बच्चों के साथ जो सीखने के शुरुआती स्तर पर थे। कुछ बच्चे शायद अब स्कूल ही नहीं आना चाहें, हो सकता है कुछ बच्चों के साथ एकदम शुरुआती स्तर से काम करना पड़े, हो सकता है उन्हें कुछ ज़्यादा समय भी देना पड़े या फिर कुछ और भी। इन सभी में बच्चों के साथ बहुत ही धैर्य से काम करना पड़ सकता है। हमारे नियमित स्तम्भ, **कक्षा अनुभव** में शामिल बहुत-से लेख बच्चों के साथ किए जाने वाले काम की रूपरेखा बनाने में मददगार हो सकते हैं और उनमें कक्षा में किए जाने वाले कामों के बारे में कुछ ठोस सुझाव भी आपको मिल सकते हैं।

कक्षा अनुभव स्तम्भ में इस बार छह आलेख हैं। पहला आलेख *मोहल्ले में अपनी जगह : मोहल्ला एलएसी* है जिसका लेखन क्षमा यादव, खेमप्रकाश यादव और निदेश सोनी ने संयुक्त रूप से किया है। आलेख में उन्होंने बताया है कि स्कूलों में तालाबन्दी के दौरान मोहल्ला कक्षाएँ किस तरह समाज के ज़रूरतमन्द बच्चों की शिक्षा का एक ज़रिया बनी हैं। इन मोहल्ला कक्षाओं को कैसे संचालित किया गया, इस बारे में भी वे काफ़ी विस्तार से बताते हैं।

दूसरे आलेख की लेखिका हैं भारती पंडित और लेख है *कक्षा 1 और 2 में रचनात्मक लेखन की गतिविधियाँ।* भारती रेखांकित करती हैं कि अगर प्रारम्भिक कक्षाओं से ही बच्चों के साथ रचनात्मक लेखन की शुरुआत कर दी जाए तो आगे की कक्षाओं में पहुँचने तक इस कौशल में और पैनापन आता है। वे लेखन की उन गतिविधियों का भी ज़िक्र करती हैं जो बच्चों के साथ उन्होंने करके देखीं।

तीसरा आलेख, *बोलते चित्र : अधूरी बातों को पूरा करने का ज़रिया,* की लेखिका रुबीना ख़ान हैं। रुबीना ने वंचित तबक़े के विभिन्न समुदायों के बच्चों के बीच अभिव्यक्ति के एक सशक्त माध्यम के रूप में चित्रों का इस्तेमाल किए जाने की गतिविधियों पर अनुभवपरक बातें लिखी हैं।

चौथे क्रम में सुशांत पानी का आलेख *गणित कक्षा के कुछ अनुभव* है। सुशांत बताते हैं कि प्राथमिक स्तर पर गणित शिक्षण को लेकर कुछ रूढ़ मान्यताएँ हैं जिनपर विचार करने की ज़रूरत है। शुरुआती गणितीय संक्रियाओं को सन्दर्भयुक्त बनाने के साथ ही बच्चों द्वारा समाधान के विभिन्न प्रयासों का विश्लेषण करके समस्या या अवरोध को पहचानना बहुत ज़रूरी है।

महामारी के दौर में ऑनलाइन क्षमतासंवर्धन के अनुभव, इस स्तंभ का पाँचवाँ आलेख है। जिसकी लेखिका हैं अर्चना कुमारी। अर्चना ने लॉकडाउन के दौरान शिक्षकों के क्षमतासंवर्धन के लिए किए गए ऑनलाइन प्रयासों के बारे में अपने अनुभव रखे हैं। वे बताती हैं कि सहज अन्तःक्रिया की जगह ये प्रयास नहीं ले सकते लेकिन मौजूदा वास्तविकता के मद्देनज़र हम क्या बेहतर कर सकते हैं।

इसी स्तम्भ का छठा आलेख *मोहल्ला कक्षा और समुदाय : ये साझेदारी रंग लाएगी है,* इसके लेखक हैं अरविन्द जैन और फ़ैज़ मोहम्मद। एक शिक्षक द्वारा मोहल्ला कक्षाओं के संचालन के विचार को समुदाय ने कैसे मूर्त रूप देने में सहयोग किया, लेख इस बारे में बताता है।

शिक्षणशास्त्र स्तम्भ में पहला लेख *जेंडर संवेदनशील शिक्षकों का निर्माण,* मधु कुशवाहा का है। लेखिका छात्र-शिक्षकों के साथ इस विषय पर किए गए काम को विस्तार से साझा करती हैं। वे कहती हैं कि यद्यपि जेंडर समानता के प्रति संवेदनशीलता और समझ बनाने के लिए शिक्षा को एक बड़ा ज़रिया माना गया है लेकिन शिक्षक शिक्षा में इसे पर्याप्त जगह नहीं दी गई है, साथ ही इस विषय पर काम करने की जटिलताओं को भी वे रखती हैं।

दूसरा आलेख *लिखना : मौखिक से मौलिक की ओर,* अवनीश कुमार मिश्र का है। लेखक इस आलेख में लिखना सीखने के विभिन्न पहलुओं और तरीक़ों पर विस्तार से बात करते हैं। उनकी मान्यता है कि एक जटिल कौशल होने के नाते कक्षा में इसपर योजनाबद्ध ढंग से काम करने और विविध प्रयासों की ज़रूरत है।

तीसरा आलेख *प्राथमिक कक्षाओं में लिखना सीखना : कुछ अवलोकन,* कमलेश चंद्र जोशी का लिखा हुआ है। इसमें प्राथमिक कक्षाओं में लेखन गतिविधि के इर्दगिर्द की जाने वाली कुछ उन ज़रूरी प्रक्रियाओं का ज़िक्र किया गया है जिनपर आमतौर पर कक्षा में काम नहीं किया जाता। उन्होंने बच्चों के लेखन के कुछ नमूनों को लेकर उसपर व्यवहारिक बातचीत की है।

विमर्श स्तम्भ के अन्तर्गत पहला आलेख, *स्कूली शिक्षा में जनजातियों की भागीदारी : रूमानियत से परे कुछ विचारणीय मुद्दे,* अमित कोहली ने लिखा है। विभिन्न तथ्यों और रिपोर्टों की शोधपरक पड़ताल के आधार पर लेखक इस बात को गम्भीरता से उठाते हैं कि तमाम समावेशी प्रयासों के बावजूद जनजातीय समुदाय को शिक्षा के दायरे में लाने का लक्ष्य अभी भी अधूरा है।

इसी स्तम्भ का दूसरा आलेख *विचारों का स्वराज बरास्ते आलोचनात्मक चिन्तन : समाज विज्ञान शिक्षण में विवादास्पद मुद्दों की भूमिका,* ऋषभ कुमार मिश्र ने लिखा है। लेखक का विचार है कि विवादास्पद मुद्दे, सामाजिक अध्ययन शिक्षण के लिए एक प्रभावी विषयवस्तु हैं, लेकिन कक्षाओं में आमतौर पर इनसे बचा जाता है। इसका एक कारण निरपेक्ष रूप से इसपर संवाद स्थापित कर पाने में असमर्थ होना भी प्रतीत होता है। ऋषभ कहते हैं कि शिक्षकों की इस सन्दर्भ में तैयारी से शायद यह सम्भव हो पाए।

तीसरा आलेख *क्या गणित आपको अन्धविश्वास सिखाता है?* मुकेश मालवीय ने लिखा है। अपनी व्यंग्यात्मक शैली में मुकेश ने व्हाट्स-एप पर वायरल हुए एक मैसेज को आधार बनाकर उसकी गणितीय पड़ताल के बहाने ये बताने की कोशिश की है कि अतार्किकता और अवैज्ञानिकता किस तरह हमें चमत्कारों और अन्धविश्वास के जाल में जकड़ लेती है।

पुस्तक चर्चा स्तम्भ में इस बार फ़राह फ़ारुक़ी की पुस्तक *एक स्कूल मैनेजर की डायरी* की समीक्षा है और समीक्षक हैं सहीद मेव। स्कूल प्रबन्धन के विभिन्न पहलुओं और उनसे जुड़ी जटिलताओं को एक स्कूल मैनेजर की दृष्टि से लेखिका ने जितने जीवन्त तरीक़े से रखा है सहीद ने उसकी समीक्षा उतनी ही गहराई से की है।

इस अंक में **साक्षात्कार** स्तम्भ के अन्तर्गत नई *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के विभिन्न मसलों पर अनुराग बेहार से टुलटुल बिस्वास की बातचीत दी गई है।

संवाद के अन्तर्गत इस बार पिछले अंक में प्रकाशित *बच्चों में पढ़ना-लिखना सीखने और बुनियादी गणितीय क्षमताओं के विविध आयाम* विषय पर हुई परिचर्चा का दूसरा भाग शामिल किया गया है। यह इस प्रश्न पर फोकस करना है कि भाषा और गणित सीखना क्यों महत्त्वपूर्ण हैं?

यह सोचा गया है कि पाठशाला के अगले कुछ अंकों का एक बड़ा हिस्सा हम किसी थीम पर केन्द्रित करें। आगामी अंक (अंक 11) का एक बड़ा हिस्सा गणित व उसकी शिक्षण प्रक्रिया पर केन्द्रित होगा। ख़ासतौर से कोविड-19 के बाद स्कूल में गणित सीखने-सिखाने का क्या सन्दर्भ रहेगा, उसमें क्या-क्या चुनौतियाँ आ सकती हैं? इन चुनौतियों के सन्दर्भ में क्या-क्या किया जा सकता है, आदि पर। इसके अलावा आगामी अंक में गणित शिक्षण से सम्बन्धित अन्य सामग्री भी शामिल की जा सकती है। ऐसी सामग्री जो पाठकों को गणित विषय पर सारगर्भित एवं कक्षा प्रक्रियाओं को समझने में मददगार हो। अपेक्षा है कि आप इस विषय पर सोचेंगे और लिखेंगे।

सम्पादक मण्डल